वर्तमान परिदृश्य में पं0 मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता का अध्ययन

डॉ0 (श्रीमती) शुभ्रा श्रीवास्तव*

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में वर्तमान परिदृश्य में पं0 मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक विचारों की प्रांसगिकता का अध्ययन किया गया है। शिक्षा समाज एवं राष्ट्र की रीढ़ होती है। हमारा वर्तमान एवं भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि हमारी शिक्षा पद्धति कैसी है? हमारे सीखने–सिखाने का तरीका कैसा है? हमारे शिक्षण–प्रशिक्षण का आधार क्या है ? हम समाज में कैसा सामाजिक आदर्श प्रस्तुत करना चाहते है ? इन सब प्रश्नों के उत्तर की आधार शिला महामना ने अपने जीवन काल में स्थापित कर दी थी। अपनी अत्याधुनिक सोच के साथ शिक्षा की ज्योति जगाने वाले महामना ने काशी हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ ही उस दौर में स्त्री शिक्षा के महत्व, राष्ट्रीयता के साथ–साथ रोजगारपरक शिक्षा की वकालत की थी। धर्म को लेकर उनकी सोच अत्यंत आधुनिक एवं प्रगतिशील थी। शिक्षा और सामाजिक चिंता को लेकर भविष्यदृष्टा महामना की यह सोच आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी कि उस समय। उनके द्वारा दिखाया गया रास्ता हमें वैश्विक शांति एवं विकास की ओर ले जायेगा।

'नये सोच के साथ नये भारत की कल्पना करने वाले महामना की उस समय की सोच को किसी भी गज से नापें मदन मोहन मालवीय जी को बहुत बड़ा पायेगें।''

विश्व के श्रेष्ठ शिक्षाशास्त्रियों में महान, 'भारत रत्न से विभूषित, परिश्रमी, विनम्र, शालीनता की प्रतिमूर्ति, आजादी की लड़ाई में सहयोग देने वाले राष्ट्रप्रेमी, अदम्य साहसी, वाकपटु, कर्मठ, संतोषी, त्यागी, उच्चकोटि के धार्मिक, समाज सेवी, राजनीतिक क्षेत्र के महारथी, शिक्षा प्रेमी तथा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक पं0 मदन मोहन मालवीय जी ने शिक्षा के प्रचार–प्रसार में जो अमूल्य योगदान दिया उसका भारत ही नही वरन संपूर्ण विश्व ऋणी है और ऋणी रहेगा। उन्होंने न केवल देश को स्वतंत्र कराने में ही सहयोग दिया, राष्ट्रीय आन्दोलनों को गति प्रदान की, सनातन धर्म, ब्रहम् समाज सभा, आर्य समाज तथा थियोसोफिकल सोसाइटी से भी जुड़े रहे, वरन सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक तथा शैक्षिक रूप से समुन्नत करने का प्रयास निरन्तर किया।

उदारमना मालवीय जी आदर्शवादी विचारक थे किंतु अपनी विचारधारा में उन्होने अन्य विचारधाराओं का प्रयोग विषय और परिस्थिति के अनुसार यथार्थ रूप में किया है। उनकी शैक्षिक विचारधारा बड़ी व्यावहारिक है। उनका मानना था कि अव्यवस्थित एवं बिना योजना के जो शिक्षा दी जाती है, उससे समय एंव धन का दुरूपयोग होता है और वह शिक्षा के विशिष्ट लक्ष्य को भी नहीं प्राप्त कर पाती है। अपनी अत्याधुनिक सोच के साथ शिक्षा की ज्योति जगाने वाले मालवीय जी का मानना था कि, ''जीवन का सर्वांगीण विकास शिक्षा का मूलमंत्र हो। शिक्षा की ऐसी व्यवस्था हो कि विद्यार्थी अपनी शारीरिक, मानसिक भावात्मक शक्तियों का विकास करके आगे चल कर किसी व्यवसाय द्वारा सच्चाई एवं ईमानदारी से अपना जीवन निर्वाह कर सके। कलापूर्ण सौदर्यमय जीवन व्यतीत कर सके तथा देशभक्ति से जो मनुष्य को उच्च कोटि की सेवा को प्रेरित करती है, अपने जीवन को अलंकृत करके राष्ट्र की सेवा कर सके। मालवीय जी का मानना था कि किसी भी प्रकार के सुधार के लिये शिक्षा पहली आवश्यकता है। उनके समक्ष एक बड़ा स्वप्न था, एक ऐसे विश्वविद्यालय की स्थापना जो भारतीय संस्कृति को सुरक्षित रख सकें, संस्कृत भाषा का प्रचार करें, सनातन धर्म की रक्षा करे और साथ ही भारतीय नागरिकों को पाश्चात्य ज्ञान–विज्ञान से परिचित कराये। अपने उद्देश्यों की पूर्ति हेतु उन्होंने 4 फरवरी, 1916 को बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की नींव डाली जो उनकी आकांक्षाओं का मूर्त रूप अनमोल रत्न एवं भारतीय गौरव का ऐसा प्रकाश पुन्ज है, जिसकी आत्मा जगत को निरन्तर आलोकित करती रहेगी। शिक्षा द्वारा वे ऐसे व्यक्तित्व को विकसित करना चाहते थे जो शोषण, अत्याचार, गरीबी, बेकारी, अन्धविश्वास के खिलाफ लड़ सके तथा देश और समाज के उत्थान में सक्रिय भागीदारी कर

* व0 प्रवक्ता, बी0एड0 विभाग, दिग्विजयनाथ पी0जी0 कालेज, गोरखपुर

सके। उनका विचार था कि, 'जो शिक्षा , सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक तथा आध्यात्मिक दासता से मुक्ति दिलाये वही सच्ची शिक्षा है।'

शिक्षा के माध्यम से वे प्राचीन आर्यो के समान भारतीयों में उन्नत चरित्र देखना चाहते थे। उनका मानना था कि, ''शिक्षा से यदि उदात्त व्यक्तित्व न बना, अनुकरणीय शुभ्र चरित्र न निर्मित हुआ तो वह शिक्षा अधूरी है।''समाज में से यदि चरित्रवान व्यक्तियों का अभाव हो जाये तो समाज ही ध्वस्त हो जायेगा,' व्यक्ति और समाज के अभ्युदय के लिये बौद्धिक विकास से भी अधिक महत्वपूर्ण है चरित्र का निर्माण और उसका विकास। मात्र औद्योगिक प्रगति से ही कोई देश खुशहाल, समृद्ध और गौरवशाली राष्ट्र नहीं बन सकता। अतः मालवीय जी ने विश्वविद्यालय का प्रमुख लक्ष्य युवाओं का चरित्र निर्माण निर्धारित किया, जहां उच्च शिक्षा द्वारा मात्र अभियंता, चिकित्सक, विधिवेत्ता, कुशल व्यापारी, वैज्ञानिक तथा शास्त्रज्ञ विद्वान ही नहीं तैयार किये जायेगें वरन ऐसे व्यक्तियों का निर्माण किया जायेगा जिनका चरित्र उज्जवल हो जो कर्तव्य परायण और मूल्य निष्ठा से ओत प्रोत हों। जिसके लिये विश्वविद्यालय केवल अर्जित ज्ञान के स्तर को प्रमाणित करके डिग्रियां देने वाली संस्था मात्र न होकर सुयोग्य एवं सच्चरित्र नागरिकों की पौधशाला बनें। ''

मालवीय जी का मानना था कि, ''अशिक्षित अंधकार में निवास करता है उसे प्रकाश में लाने हेतु विद्या का प्रसार आवश्यक है।'' अतः जब तक भारतीय जनता को विद्या का प्रकाश नहीं दिया जाता उसमें उस चेतना का सवर्था अभाव रहेगा जो उन्हे सुविकसित मानव बना सके। शिक्षा द्वारा विभिन्न पक्षों एवं आत्मोन्नति को दृष्टिगत रखते हुये वह ऐसी शिक्षा प्रणाली के समर्थक थे जो देश को सम्मुनतशील एवं समृद्धशील बनाने में समर्थ हो। अतःमालवीय जी व्यक्ति के चारित्रिक, मानसिक, शारीरिक, आध्यात्मिक विकास के साथ समाज एवं देश की समृद्धि को भी उतना ही आवश्यक मानते थे जिसके लिये उन्होंने व्यावसायिक विकास हेतु व्यावसायिक शिक्षा पर विशेष बल दिया, जिससे व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाया जा सके। उनके अनुसार बेकारी का मुख्य कारण है यह है कि हमारे विश्वविद्यालय विभिन्न विषयों की अर्थकारी शिक्षा रोजगारपरक शिक्षा नहीं देते हैं। विद्यार्थियों को प्रयोगात्मक ज्ञान के साथ–साथ विज्ञान कला कौशल और व्यवसाय संबंधी ऐसी शिक्षा दी जाये जिससे देशी व्यवसाय तथा घरेलू उद्योग धंधों की उन्नति हो। समाज से जनसाधारण की गरीबी एवं निर्धनता दूर करने हेतु एक ओर जहां उन्होने कुटीर उद्योग धंधों पर जोर दिया, वहीं देश की उन्नति एवं विकास हेतु विज्ञान एवं तकनीकी को महत्ता प्रदान की। इसी उद्देश्य से उन्होंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में विज्ञान तकनीकी, कला कौशल, कानून, इंजीनियरिंग, कृषि, वाणिज्य व्यवसाय प्रबन्ध, चिकित्सा, उद्योग तथा शिक्षक–प्रशिक्षण आदि की समुचित व्यवस्था की, जो आज भी अत्याधुनिक ज्ञान–विज्ञान के लिये प्रसिद्ध हैं। यहाँ शिक्षा के लिये भारत ही नही अपितु विदेशों से भी बड़ी संख्या में छात्र आते हैं।

महामना राष्ट्रीय शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। उनके अनुसार, ''राष्ट्रीय शिक्षा से ही व्यक्ति, समाज के साथ एक सूत्र में बंधता है, राष्ट्र हित की बात सोचता है''। समाज को भूत से वर्तमान ओर वर्तमान से भविष्य की ओर ले जाने के लिये शिक्षा श्रृंखला का कार्य करती है।शिक्षा को महामना ने राष्ट्रीय निर्माण की अनिवार्य पूर्वशर्त के रूप में देखा जिससे क्षेत्रवाद, भाषावाद, जातिवाद, बहुधर्म वाले भारत देश में सबसे ऊपर राष्ट्रीय चरित्र का विकास हो तथा एकता स्थापित हो। राष्ट्र निर्माण की संकल्पना में प्रजातांत्रिक मूल्यों और राष्ट्रीय सहमति को सदैव उच्चतम वरीयता दी।एक आदर्श नागरिक ही गणतंत्र की पहचान है–ऐसी सोच के साथ मालवीय जी ने बहुआयामी शिक्षा को परम आवश्यक माना और भारत को अशिक्षा एवं अज्ञान के अंधकार से निकालने का संकल्प लिया। काशी हिंदू विश्वविद्यालय मालवीय जी की देशभक्ति और प्रजातांत्रिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता का जीवन्त उदाहरण है।

देश की समुचित अव्यवस्थाओं को सुधारने का साधन शिक्षा को मानते हुए उन्होने तत्कालीन उपयोगी भारतीय शिक्षा व्यवस्था की रूपरेखा निर्मित की। मालवीय जी मनुष्य के बौद्धिक एवं मानसिक विकास हेतु विभिन्न भाषाओं एवं विषयों का ज्ञान देकर उसे विवेकशील बनाना चाहते थे जिससे वह अच्छे बुरे में भेद कर सके, करणीय अकरणीय कर्मो को समझकर सच्चे मार्ग का अनुसरण कर सके। भारतीय संस्कृति के अनन्य पुजारी महामना मालवीय जी ने विश्वकल्याणकारी स्वरूप का स्पष्ट ज्ञान देने, अतिथि सत्कार , सहिष्णुता, निःस्वार्थ सेवा, देश भक्ति, सहयोग, सत्य के साथ अनुशीलन, निर्भिकता,

त्यागवृति जैसे गुणों को विकसित करके उन्हें तदनुकूल आचरण में समाहित करने की बात कही। उनका विचार था कि, हमे दूसरो के कष्टों को उसी प्रकार से अनुभव करना चाहिये जैसे हम अपने कष्टों का अनुभव करते हैं। हमें दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिये, जैसे व्यवहार की आशा हम अपने लिये दूसरों से करते हैं। उन्होने केवल संस्थायें ही नहीं बनाई वरन मनुष्य बनाया।

भविष्यदृष्टा मालवीय जी का दृष्टिकोण पाठ्यक्रम की दृष्टि से बड़ा व्यावहारिक एवं विस्तृत था।

उन्होने दो संस्कृतियेां के संगम प्राचीन अध्ययन एवं आधुनिक पाश्चात्य ज्ञान के समन्वयीकरण पर बल दिया। मालवीय जी में जहाँ प्राचीन ज्ञान के प्रति जिज्ञासा एवं प्रेम था, वही अत्याधुनिक ज्ञान–विज्ञान के प्रति आकर्षण था। उनका मानना था कि, आध्यात्मिक ज्ञान से ही मानव का जीवन सुखी नहीं बनाया जा सकता, इसके लिये भौतिक ज्ञान भी आवश्यक है। मालवीय जी ने प्राचीन संस्कृति से जुड़े तथा आधुनिक विचार के पथ पर अग्रसर दोनों प्रकार के समान विषयों को पढ़ने की योजना बनाई जैसे धर्म दर्शन, ज्योतिष, भाषा, कला, संगीत, रसायन, भौतिक विज्ञान व वनस्पति विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, गणित, भूगोल, इतिहास, राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, टेक्नोलोजी, व्यापार, वाणिज्य आदि। इसके साथ ही उन्होंने पाठ्यक्रम में भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनो प्रकार के विषयों को महत्व दिया, उसी प्रकार से प्राचीन एवं आधुनिक दोनो प्रकार की शिक्षण विधियों को महत्ता दी। धर्म और दर्शन पढ़ने के लिये जहाँ उन्होंने मनन चिन्तन तथा व्याख्यान विधियों को महत्वपूर्ण माना, वही वैज्ञानिक तथा व्यावहारिक विषयों हेतु क्रियात्मक प्रयोग तथा अन्वेषण विधियों के प्रयोग को महत्ता प्रदान की। उन्होंने तत्कालीन उपयोगी भारतीय शिक्षा व्यवस्था की रूपरेखा निर्मित करते हुए ''हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान'' का नारा देते हुए हिन्दी को शिक्षा का माध्यम बनाने की बात कही, तथा मातृभाषाओं को भी महत्ता प्रदान की। साथ ही उन्होंने अंग्रेजी तथा विदेशी भाषाओं का भी समर्थन किया क्यों कि उनका मानना था कि, अंग्रेजी भाषा के ज्ञान द्वारा ही विज्ञान तकनीकी शिक्षा का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है जिससे हम पाश्चात्य देशों की प्रगति की बराबरी कर सकते है ।आज दुःख की बात यह है कि आजादी के इतने वर्षो बाद भी भारत में जनभाषा हिंदी को वह स्थान नहीं मिल सका जब कि अंग्रेजी शासन के दौरान महामना ने अदालत एवं सरकारी कार्यालयों में हिंदी में कार्य करने की स्वीकृति इलाहाबाद न्यायालय के अंग्रेज न्यायाधीश से दिलवाई थी।

अध्यापक को भावी समाज के निर्माता के रूप में स्वीकृत करते हुए मालवीय जी ने उसे शिक्षा प्रक्रिया में सर्वश्रेष्ठ स्थान दिया है। छात्रों को उपदेश देते हुए मालवीय जी ने कहा, ''सादा जीवन उच्च विचार'' आदर्श मत भूलों। स्त्री जाति का आदर करो। मन को विमल बना लो, आत्मा को शुद्ध कर लो, संसार को शुद्ध कर लो, संसार में जहॉ जाओगे मान के अधिकारी होगे''। उनका मानना था कि, यदि पढ़ने से कुछ समय बचाकर छात्र राजनीति में लगाते हैं तो यह बुरा नहीं है, देश सेवा के लिये तैयार रहना उसका परम धर्म है।'' विद्या ददाति विनयम् से सहमति रखने वाले मालवीय जी का मानना था कि, विद्यार्थी को विद्या ग्रहण करते समय विनयी होना चाहिये। प्रभावात्मक अनुशासन के समर्थक मालवीय जी के विचारानुसार, अध्यापक को अपने व्यक्तित्व से छात्रों को इस प्रकार प्रभावित करना चाहिये कि वह उसके समस्त गुणों को सीख सके। छात्रों को दैनिक क्रिया, पाठ्य क्रिया, पाठयान्तर क्रियाओं में इस प्रकार व्यस्त रहना चाहिये कि अनुशासनहीनता की कोई समस्या ही न उत्पन्न हो।

इस हेतु मालवीय जी ने ऐसे विद्यालय की संकल्पना की थी जो अत्याधुनिक शैक्षिक एंव शोध उपकरणों से युक्त हो, जहाँ उच्चतम ज्ञान दिया जा सके, सृजनात्मक खोजो को प्रेरणा मिल सके, वह प्राचीन एवं आधुनिक ज्ञान विज्ञान का केन्द्र हो। उनके समक्ष एक ओर जहां गुरूकुल प्रणाली का स्वरूप था, तो वही दूसरी ओर महानतम विश्वविद्यालय तक्ष शिला एवं नालन्दा का आदर्श स्वरूप उनके मस्तिष्क में था। इन्ही परिकल्पनाओं का साकार रूप काशी हिन्दू विश्वविद्यालय था जिसकी उद्देश्य था –

1. हिन्दुओं की सर्वोत्कृष्ट विचारधारा और संस्कृति की प्राचीन सभ्यता की सभी मंगलकारी और महान बातों की रक्षा करने के साधन स्वरूप हिन्दू शास्त्र और संस्कृत साहित्य के अध्ययन को प्रोत्साहन देना।
2. ज्ञान विज्ञान, विद्या और शास्त्रों की सभी शाखाओं के अध्ययन और तात्विक विवेचना को आगे बढ़ाना।
3. आवश्यक व्यावहारिक शिक्षा के साथ ऐसी वैज्ञानिक शिल्प सम्बन्धी और व्यावसायिक विद्याओं को बढ़ाना, जिससे देशी व्यवसायों की अभिवृद्धि हो, राज्य की धन शक्ति बढ़ें।

4. धर्म औार सदाचार को शिक्षा का आवश्यक अंग बनाकर भारत के युवकों में चरित्र बल भरना।

मालवीय जी ने हिन्दू विश्वविद्यालय की विचारणीय योजना बनाकर विभिन्न प्रकार की शिक्षा पर जोर दिया। उनका मानना था कि संस्कृत के अध्ययन से चरित्र और बुद्धि का विकास होता है, धर्म का ज्ञान होता है भारतीय धर्म, संस्कृति, धर्म ग्रन्थों, वेदो, उपवेद, आध्यात्म शास्त्र तथा दर्शन हेतु यह उपयोगी है। आधुनिक युग की प्रगति एवं स्थिति के अनुरूप भारत की भौगोलिक दशा को दृष्टिगत रखते हुए, आयुर्वेद की विशेष महत्ता को ध्यान में रखकर इसकी प्राचीन नवीन ढंग की चिकित्सा प्रणाली के ज्ञान पर बल देने के साथ, इसके प्रशिक्षण संस्थाओं की स्थापना और भारतीय अध्यापकों की नियुक्ति करने की आवश्यकता पर अपने विचार प्रस्तुत किये तथा उसके क्रियान्वन पर उन्होंने जोर दिया। इसके साथ ही विज्ञान, तकनीकी, शिल्पकला कौशल, औद्योगिक शिक्षा के ज्ञान द्वारा उन्होंने देश की बेकारी एवं अवनति को दूर करके उत्पादन वृद्धि व देश के समृद्ध विकास करने की बात कही। मालवीय जी का मानना था कि वस्तुतः भारत एक कृषि प्रधान देश है। अतः कृषि की शिक्षा भी नवीनतम तरीके से दी जाये जिसमें अन्वेषण, शोध, क्रियात्मक कार्यो पर विशेष ध्यान दिया जाये। इसके साथ ही भारतीय संस्कृति सभ्यता के पोषण एवं सुखमय राष्ट्रीय जीवन के लिये संगीत, ललित कलाओं, गन्धर्व कला, वास्तु कला, अभिनय कला, चित्रकला आदि का समावेश भी शिक्षा योजना में किया जाना चाहिये जिससे संस्कृति का पुनर्निर्माण एवं पुनर्विकास हो सके तथा राष्ट्र का जीवन और राष्ट्र के व्यक्ति का जीवन समृद्ध हो।

समाज के सभी वर्गो को शिक्षा दिलाने हेतु उन्होंने सार्वजनिक शिक्षा को प्रोत्साहन दिया। सभी वर्गो के स्त्री पुरूषों हेतु शिक्षा की व्यवस्था की। ''शिक्षा सभी मनुष्यों का जन्म सिद्ध अधिकार है'' सिद्धान्त के प्रवर्तक मालवीय जी का मानना था कि, ''देश के अभ्युदय के लिये सब प्रकार से यत्न करना होगा कि देश का कोई बालक, बालिका निरक्षर न रहे।'' देश में व्याप्त निरक्षरता को भारतीयों के पतन का कारण मानते हुए उन्होनें कहा कि, प्रत्येक धर्मावलम्बियों का कत्तर्व्य है कि देश से इन्हें दूर करने के लिये वे कटिबद्ध हों। मानवता की सेवा प्रत्येक धर्म का लक्ष्य होना चाहियें, जो निःस्वार्थ भाव से किया जाना चाहियें। अतः साक्षरता पर उनका विशेष बल था। वर्ण–व्यवस्था कों मानने वाले मालवीय जी ने कभी भी शूद्रों को उनके शिक्षा अधिकार से वंचित नहीं किया। उनका मानना था कि सामान्य शिक्षा का अधिकार सभी मनुष्यों का है किन्तु विशिष्ट शिक्षा की व्यवस्था बच्चों की योग्यतानुसार होनी चाहिये। धर्म, लिंग, जाति, वर्ग, क्षेत्र आदि किसी के साथ बिना भेदभाव सबको समान रूप से शिक्षित करने पर उन्होनें बल दिया। जनसाधारण में शिक्षा के प्रचार–प्रसार के लिये मातृभाषा हिन्दी, उर्दू, मराठी आदि को माध्यम बनाने की बात कही।

स्त्री शिक्षा के संबंध में महामना के विचार अत्यंत मुखर थे। उनका मानना था कि पुरूषों की अपेक्षा स्त्री शिक्षा का अधिक महत्व है क्योंकि वे ही भारत की भावी संतति की माँ हैं। वे ही हमारे भावी राजनीतिज्ञों, तत्व ज्ञानियों, विद्वानों, व्यापार तथा कलाकौशल के विशेषज्ञों की प्रथम शिक्षिका है। उनकी शिक्षा का प्रभाव भारत के भावी नागरिकों पर विशेष रूप से पड़ेगा। वे नारी जाति का सर्वतोभावेन उत्थान एवं कल्याणचाहने वाले महामानव थे।

मालवीय जी की विचारधारा संकीर्ण न होकर उदार एवं विस्तृत थी। बाल–विवाह, स्त्रीवर्ग के संकीर्ण सामाजिक स्तर तथा जाति प्रथा पर वे विश्वास नहीं करते थे।उन्होंने राष्ट्रीय, धार्मिक, सांप्रादायिक एकता की स्थापना पर बल दिया औैर वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना का प्रसार किया। वे चाहते थे कि हिन्दू, मुस्लिम भावात्मक रूप से निकट आकर अपने मनमुटावों को सदैव के लिये समाप्त कर दें और अपनी–अपनी शक्ति राष्ट्रहित और स्वतंत्रता प्राप्ति में लगा दें जिससे देश का अधिक भला होगा। वह प्रत्येक में राष्ट्रीयता एवं मातृभूमि के प्रति अटूट प्रेम की भावना को निहित करना चाहते थे।

प्रत्येक धर्मो के प्रति समान आदर भाव उनकी महानता का द्योतक था। धार्मिक सहिष्णुता के समर्थक मालवीय जी ने अभ्युदय के एक लेख में लिखा था, 'यह केवल हिंदुओं का देश नहीं है, हिंदुस्तान जैसे हिंदुओं का प्यारा जन्म स्थान है वैसे ही मुसलमानों का भी है। यहां दोनों जातियां बसती है और रहेंगी। जितना ही दोनों में परस्पर मेल एवं एकता बढ़ेगी उतनी ही देश की उन्नति में हमारी शक्ति बढ़ेगी और उनमें जितना बैर विरोध या अनेकता रहेगी उतने ही हम दुर्बल होगें।' अतः प्रत्येक

नागरिक में करूणा के रूप में देशभक्ति भावना, भारतीयता की भावना को परिलक्षित होना अनिवार्य है। ऐनी बेसेंट ने कहा था, मैं दावे के साथ कह सकती हूँ कि विभिन्न मतों के बीच केवल मालवीय जी ही भारतीय एकता की मूर्ति बने खड़े हैं। सत्यमेव जयते के प्रसार में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही।

आज गंगा की अविरलता को बनाये रखने के लिये जो आवाज उठाई जा रही है उसकी आधार शिला भी महामना ने स्वयं रख दी थी। अविरल एवं निर्मल गंगा अभियान हेतु रिपोर्ट बनाकर गंगा महासभा की स्थापना की तथा जब अंग्रेज सरकार ने भारतीय संस्कृति से खिलवाड़ करने के उद्देश्य से सीवरों को गंगा से जोड़ा तो महामना ने सबसे पहले इसका विरोध किया।

मालवीय जी ने स्वाध्याय, संयम, अभ्युदय, निःस्वार्थ सेवा, मानवश्रम की महत्ता, आत्मअनुशासन, क्रियाशीलता, संवेदनशीलता, राष्ट्रीयता, वसुधैव कुटुम्बकम की भावना, तर्क व चिन्तनशीलप्रवृत्ति, कौशलनिर्माण दक्षता, गुरू–शिष्य परम्परा, संयम, सामाजिक जागरूकता, त्रिभाषा सूत्र, सर्वधर्म समभाव जैसे मूलमन्त्रों से एक ओर जहाँ अभिसिंचित किया, वही उनके सारगर्भित शैक्षिक विचारों का ही प्रभाव है कि आज नैतिक–शिक्षा, व्यावसायिक तकनीकी कौशल, स्त्री शिक्षा, कम्प्यूटर शिक्षा, मूल्य शिक्षा, सामुदायिक क्रियाकलाप, पाठयक्रमेत्तर क्रियाकलाप, समाज–सेवा को महत्ता दी जा रही है। पर्यावरण संरक्षण, कौशल विकास कार्यक्रम, शैक्षिक अवसरों की समानता का अवसर देते हुए , जनतांत्रिक नैतिक मूल्यों को विकसित करने का कार्य शिक्षा द्वारा किया जा रहा है। नारी सशक्तिकरण, सर्व–शिक्षा अभियान, गरीब एवं पिछड़े वर्गों हेतु विशेष योजनायें, निःशुल्क अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था, साक्षर भारत मिशन, सतत–शिक्षा, जनजागरण अभियान जैसी अनेक योजनाओं को क्रियान्वित किया जा रहा है। शिक्षा के प्रचार–प्रसार हेतु विद्यालयों की स्थापना की जा रही है।

वर्तमान में भारत के विकास की राहें सरल हुई हैं किन्तु अभी भी हमारे समक्ष गरीबी, अशिक्षा, मूल्य संकट, बेरोजगारी, आतंकवाद, भ्रष्टाचार मुक्त समाज की स्थापना, अनुशासनहीनता, सामाजिक विषमता, देश के एक तिहाई हिस्से को गरीबी रेखा से ऊपर उठाना, पर्यावरणीय समस्यायें, राष्ट्रीय एकीकरण, मानव विकास सूचकांक में विश्व में अग्रणी राष्ट्रों में अपना स्थान बनाने और सहस्त्राब्दि विकास के लक्ष्य के अनुरूप समाज को परिवर्तित करने की बड़ी चुनौतियां विद्यमान हैं।

21वीं सदी में शिक्षा पर अंतराष्ट्रीय आयोग की रिपोर्ट **लर्निंग द ट्रेजर विद इन** में कहा गया, इस सदी में हमें बहुत से तनावों और द्वंदों से गुजरना पड़ेगा, जैसे वैश्विक और स्थानीय, सार्वभौमिक और व्यैक्तिक परंपरा, आधुनिकता, दीर्घकालिक एवं अल्पकालिक सोच, प्रतियोगिता एवं सहयोग, ज्ञान का असीमित प्रसार, मानव की ग्राह्य क्षमता आध्यात्मिकता एवं भौतिकता। आज के युवा अपने वर्तमान एवं भविष्य के प्रति ज्यादा जागरूक, सजग एवं चिंतित है। उनके समक्ष अनेक सवाल हैं जो शिक्षा की गुणवत्ता, उद्देश्य, रोजगारपरक शिक्षा, रचनाधर्मिता एवं मानवीयता से संबंधित है जिनका उत्तर आसान नहीं है। आज के वैश्विक प्रतिर्स्पधात्मक दौर में शिक्षा ऐसी होनी चाहिये जिससे युवाओं में तनाव एवं द्वंद को कम करके संतुलन बनाया रखा जा सके, जो उनमें ज्ञान, कौशल दक्षता विकसित करके, आत्मनिर्भर बनाये, सही गलत समझाने की शक्ति विकसित करे तथा हर कसौटी पर खरा उतरने हेतु चुनौतियों का सामना करने सम्बन्धी गुण एवं क्षमता का विकास करे, उन्हें राष्ट्र की सांस्कृतिक विरासत, परम्परा को सहेज कर अक्षुष्ण बनाये रखने में सक्षम बनाये क्यों कि शिक्षा व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास का आधार है। इस दृष्टिकोण से राष्ट्रीय लक्ष्य के परिप्रेक्ष्य से मालवीय जी के शैक्षिक विचार अधिक प्रासंगिक हैं । आज हमें ऐसी युवा पीढ़ी की आवश्यकता है जो मालवीय जी के विचारों से मार्गदर्शन प्राप्त करके चट्टानों के साथ टकरा सके। आज हमें ऐसे विचारों की जरूरत है जिनकी जड़े हमारी प्राचीन अतीत से जुड़ी हों। हमें ऐसे धर्म की आवश्यकता है जो प्रत्येक को एक माला में पिरोये। युवाओं को आज इस प्रकार प्रेरित करना होगा कि वे ईमानदारी, लगन, निष्ठा से निःस्वार्थ भाव से अपने दायित्वों का निर्वहन करें। भ्रष्टाचार आंतकी गतिविधियों के खिलाफ संघर्ष को अंजाम देकर राष्ट्र सेवा, राष्ट्र की एकता में अपनी सकारात्मक भूमिका का निर्वहन कर सके।

इन चुनौतियो से जूझने के लिये शिक्षा एक महत्वपूर्ण साधन बन सकती है जो सिर्फ ज्ञानशील न बनाये वरन क्रियाशील बनायें जो रोजगारपरक होने के साथ ही शांति व मानव विकास के प्रतिमानों

के अनुकूल हो जिसका अंतिम पड़ाव श्रेष्ठ एवं जिम्मेदार नागरिक बनाना है। संस्कारनिष्ठ एवं गुणवत्तायुक्त शिक्षा ही सामाजिक समरसता, राष्ट्रीय एकता एवं विश्वबन्धुत्व को बढ़ा सकती है।

इसके लिये यदि हम भविष्यद्रष्टा मालवीय जी के जीवन दर्शन और शैक्षिक विचारों आदर्शो को शिक्षा–योजना में प्रभावी ढंग से नीतिबद्व रूप में पुनर्नियोजित, पुनर्सयोजित कर क्रियान्वित करें तो उसे अधिक उपयोगी बना कर लाभान्वित हुआ जा सकता है। जिसकी आधारशिला मालवीय जी ने रखी, मालवीय जी द्वारा प्राप्त विचार आज भी उतने ही सामयिक एवं प्रासंगिक हैं जो हमें शांति एवं विकास की ओर ले जायेगे। '**नेकी कर दरिया में डाल**' यह उनके जीवन का आदर्श था। यश की उन्हें चाह नहीं थी परन्तु यश उनकी कर्त्तव्य परायणता पर मुग्ध होकर उनके पीछे–2 चलता था। उनके द्वारा जलाई गई दिव्य ज्योति आजीवन जलती रहेगी और हम सब प्रकाशित होते रहेगें।

सन्दर्भ ग्रन्थ : –

1. ग्रोवर, डॉ0 इन्द्रा संसार के महान शिक्षाशास्त्री, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, 1977।
2. चौबे, डॉ0 एस0पी0 भारत तथा पश्चिम के श्रेष्ठ शिक्षा शास्त्री, भवदीय प्रकाशन, फैजाबाद 2002।
3. दूबे डॉ0 रमाकान्त, भारतीय शिक्षाशास्त्री, मनोहर पब्लिकेशन, गोरखपुर 1984।
4. पाण्डेय डॉ0 राम शकल, विश्व के श्रेष्ठ शिक्षाशास्त्री, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा 2005।
5. मालवीय मदन मोहन, साप्ताहिक अभ्युदय, इलाहाबाद 1907।
6. मालवीय मदन मोहन–स्त्री शिक्षा।
7. राजस्वी, एम0आई0 मदनमोहन मालवीय, मनोज पब्लिकेशन्स मार्च–2006।
8. वर्मा, वी0एन0 प्रसाद, विश्व के महान के शिक्षा शास्त्री, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना।
9. सिंह डाॅ ओ0पी0 शिक्षा दर्शन एवं शिक्षा शास्त्री, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद 2004।
10. en.wikipedia org/wiki Madan_Mohan_Malaviya.